गुरमति संगीत : दिलरूबा वाद्य के संदर्भ में

प्रभदीप सिंह

संनी ओबराऐ विवेक सदन : ऐडवांस इंसटीच्यूट आफ सोशल साइंसज, श्री आनंदपुर साहिब

अमूर्त

सदियों से भारतीय संगीत की अनेक विधाओं का प्रचलन रहा है। जिनमें से आज संगीत में उत्तरी व दक्षिण विधाएँ प्रचलित हैं। इन्ही दोनों विधाओं के अन्तर्गत अनेक अन्य विधाओं का जन्म हुआ जैसे कि सूफी, भक्ति, ठुमरी, टप्पा, फिल्मी, दादरा और गुरमति संगीत। गुरू नानक ने शब्द कीर्तन करते हुए वाद्य का भी उपयोग किया।उनके साथ भाई मरदाना ने रबाब वाद्यय का वादन किया। इस तरह गुरू नानक देव जी ने एक नई और मौलिक कीर्तन परम्परा का आरम्भ किया और जिसका विकास समय समय पर होता गया।रबाब से शुरू हुआ कीर्तन बाद में ताऊस, सारंदा, दिलरूबा, इसराज के साथ भी होने लगा। पंजाब में दिलरूबा वाद्य का प्रचार व विकास का श्रेय गुरमति संगीत परम्परा को जाता है।दिलरूबा वाद्य पूर्ण रूप से गुरमति संगीत को सम्रपित है।

कुंजी शब्दः भारतीय संगीत, गुरमति संगीत , कीर्तन परम्परा , संगीत कार ,दिलरूबा वाद्य।

संगीत वह ललित कला है जिसके द्वारा संगीत कार अपने हृदय के सूक्ष्म भावो को स्वर व लय के माध्यम से साकार करता है। भारतीय संगीत विद्वानों ने संगीत की परिभाषा कुछ इस प्रकार दी है:

''गीतं वाद्यं तथा नृत्यं त्रैंयं संगीत मुचयते।''[1]

संगीत परम्परा भारत में प्राचीन काल से ही मानी जाती है।सदियों से भारतीय संगीत की अनेक विधाओं का प्रचलन होता आया है। जिनमें से आज संगीत में उत्तरी व दक्षिण विधाएँ प्रचलित हैं। इन्ही दोनों विधाओं के अन्तर्गत अनेक विधाओं का जन्म हुआ जैसे कि सूफी, भक्ति, ठुमरी, टप्पा, फिल्मी, दादरा और गुरमति संगीत। गुरमति संगीत की बात करें तो इसका प्रारम्भ गुरू नानक देव जी के जन्म उपरान्त हुआ। गुरू नानक देव जी ने अपनी बात जनसाधारण तक पहुँचाने के लिए संगीत को माध्यम के तौर पर चुना। ''गुरू नानक के आगमन तक भारतीय संगीत दो रूपो में बाँटा जा चुका था भारतीय और कर्नाटकीय। इस समय भक्ति लहर, प्रभु भक्ति की एक लहर के रूप में प्रचारित हुई। इस परम्परा में अकालपुरख के इलाही संदेशाधीन जनसाधारण के लिए भाव पूर्ण में गाया गया।''[2]

भारतीय संस्कृति का मुख्य स्त्रोत अध्यात्मिक है। इसलिए यहां की प्रजा ने अध्यात्मिक्ता को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष किसी न किसी रूप में स्वीकार किया है। भारतीय संस्कृति का आधार धर्म एवं साहित्य है।जब भी कभी किसी परम्परा का सांस्कृतिक विश्लेषण करना हो तो उस परम्परा की रीति रिवाज, मर्यादा, जाती समुदाय या उसके साहित्य या संगीत के बारे में जानना होगा।क्योंकि प्रत्येक परम्परा का एक मर्यादित बंधन होता है जिसमें कल्याण निहित रहता है।

1. "गुरमति संगीत का प्रमुख मनोरथ है, 'धुर की वाणी' के असल उद्देश्य को समस्त जगत के मानव तक संचारित करना है।"[3]कीर्तन की महिमा विशेष है जैसे श्री गुरु ग्रंथ साहिब की वाणी में आया है :

कलयुग महि कीर्तन प्रधाना।।
गुरमुख जपीअै लाए ध्याना।।[4]

कीर्तन को निरमोलक हीरा माना गया है।गुरबाणी की में आया है :

कीर्तन निरमोलक हीरा आनंद गुनी गहीरा।।[5]

गुरु नानक देव जी ने संगीत को अपना माध्यम बनाकर कीर्तन को भक्ति का एक अनिवार्य अंग बनाया।जब गुरु नानक देव जी ने अवतार धारण किया तो इसके उल्लेख के बारे में भाई गुरदास जी की पहली वार की सताईसवीं पाऊड़ी में लिखा है:

सतिगुरु नानक प्रगटिया।।
मिटी धुंध जगि चानणु होआ ।।
गुरमुख कल विच प्रगट होआ।।[6]

मध्य युग में संगीत में आई गिरावट को देख कर राग विद्या को नया मोड़ देकर गुरु नानक देव जी ने रागबद्ध कीर्तन की प्रथा चलाई। यह भी कहा जा सकता है कि भारतीय संस्कृति के मुख्य तत्त्व संगीत को जीवित रखा।गुरु नानक देव जी ने अपने साथी भाई मर्दाना के सहयोग से कीर्तन किया।भाई मर्दाना रबाबी थे।गुरु नानक देव जी की तरह बाकी सिक्ख गुरुओं ने भी संगीत को कीर्तन द्वारा जीवित रखा।कीर्तन का यह स्वरूप आज भी गुरुद्वारों में प्रचार प्रसार में है। "श्रीगुरु ग्रंथ साहिब में प्रतिपादित संगीत प्रबंद्ध 'गुरमतिसंगीत' है जिसका अर्थ है गुरु की मत्त अनुसार सिरजा गया संगीत विधान।"[7]

गुरमति संगीत का भाव है गुरू की मत से सिरजा गया संगीत। गुरमति संगीत का सिद्धांत श्री गुरू ग्रन्थ साहिब से प्राप्त होता है। श्री गुरू ग्रंथ साहिब में दर्ज वाणी रागों में निर्धारित है। गुरमति संगीत में इन्हीं रागों का गायन करते हुए शब्द कीर्तन किया जाता है। गुरमति संगीत सिक्ख धर्म की प्रभावित शब्द कीर्तन परम्परा है जिसको साधारण रूप में गुरवाणी संगीत, गुरवाणी कीर्तन आदि नामों से भी जाना जाता है। गुरू नानक ने शब्द कीर्तन करते हुए वाद्य का भी उपयोग किया।आपके साथ भाई मरदाना ने रबाब वाद्यय का वादन किया। इस तरह गुरू नानक देव जी ने एक नई और मौलिक कीर्तन परम्परा का आरम्भ किया और जिसका विकास समय समय पर होता गया।रबाब से शुरू हुआ कीर्तन बाद में ताऊस, सारंदा, दिलरूबा, इसराज के साथ भी होने लगा।

शुष्क अनुनादक और एक चपटे अंगुलिपटल (दाँडी) से युक्त सारिकाओं में तराशा हुआ धनुर्वाद्य। इसमें धातु के चार मुख्य तार, बीस अनुकंपी तार और उन्नीस अंडाकार सारिकाएँ होती हैं। इसे घोड़े के बाल से बने गज से बजाया जाता है। इसे उत्तरी शास्त्रीय संगीत में एकल के साथ–साथ सहायक वाद्य यंत्र के रूप में इस्तेमाल किया जाता है। यह गुरबानी के साथ बजाए जाने वाले एक सहायक वाद्य यंत्र के रूप में भी लोकप्रिय है।[8]

गुरमति संगीत में दिलरूबा वाद्य को गायन के अधीन ही रखा जाता है। रबाब के बाद दिलरूबा वाद्य गुरमति संगीत में अधिक प्रचलित है।यह एक गज वाद्य है किन्तु इस में पर्दों का भी प्रयोग किया जाता है। गज से बजने वाले पर्दों से युक्त बहुत कम वाद्यय यंत्र हैं, दिलरूबा उनमें से एक वाद्य है।

दिलरूबा फारसी भाषा का शब्द है। जिसका अर्थ है – प्यार, प्रीतम और मन को आन्नदित करने वाला।दिलरूबा का उल्लेख प्राचीन ग्रन्थों में नहीं मिलता। यह वाद्य इसराज के बाद प्रचलन मे आया। सैधांतिक तौर पर यह दोनो वाद्यों के रूप, आकार, वादन विधि आदि में अन्तर कम है। इसराज बंगाल में और दिलरूबा पंजाब की गुरमति संगीत शैली में उपयोग किया जाता है।

दिलरुबा का अविष्कार लगभग 300 साल पहले गुरु गोबिंद सिंह (10 वें सिख गुरु) ने किया था, जिन्होंने इसे ताऊस (एक प्राचीन और भारी वाद्य यंत्र) से प्रेरित होकर बनाया था। इसके

हल्के होने की वजह से यह इसे अलग–अलग जगह ले जाना आसान पड़ता था, जिस कारण यह खालसा (सिख) सेना इसे घोड़े की पीठ पर लादकर लेकर जा सकती थी। इस प्रकार यह उनके लिए एक सुविधाजनक विकल्प के रूप में उभरा।[9]

दिलरूबा वाद्य का प्रचलन महाराजा रणजीत सिंह के समय से आरम्भ हुआ। ताऊस की बनावट मे कुछ परिवर्तन करने के बाद दिलरूबा वाद्य की उत्पत्ति हुई।यह वाद्य बंगाली वाद्य इसराज से काफी मिलता जुलता है।सन 1990 के आस पास सुप्रसिद्ध रबाबी भाई चाँद अपनी कीर्तन चौंकी के समय श्री हरिमन्दर साहिब मे दिलरूबा का उपयोग करते थे। उनके निधन के बाद उनके शागिरदों में से भाई गुरमुख सिंह, भाई हस्सा सिंह और भाई उत्तम सिंह दिलरूबा वाद्य के साथ श्री हरिमन्दिर साहिब में कीर्तन करते थे।

गुरमति संगीत में दिलरूबा का प्रयोग ''भाई चतर सिंह ने ननकाना साहिब में 1945ई. से शुरू कर दिया था। 1947 ई. के बाद वह पटियाले के गुरूद्वारे में भाई गुरमुख सिंह, भाई सुरमुख सिंह फक्कर के जत्थे के साथ दिलरूबा की संगति करने लगे।''[10]

पंजाब में दिलरूबा वाद्य का प्रचार व विकास का श्रेय गुरमति संगीत को जाता है। गुरमति संगीत मे चौकी प्रथा दौरान एक प्रमुख गायक के साथ दिलरूबा,रबाब,सरंदा वाद्यो का वादन किया जाता हैं। वर्तमान में भी श्री दरबार साहिब अमृतसर में भी सुबह शाम दिलरूबा की संगत कीर्तन के साथ सुनने को मिल जाती है। यह वाद्य आज कल कीर्तनकारों द्वारा अपनी शब्दो की रिकार्डिग में भी उपयोग किया जाने लगा है। दिलरूबा वाद्य पूर्ण रू‍प से गुरमति संगीत को सर्मित है। गुरमति संगीत में दिलरूबा वाद्य अनेक राग दरबारों में सुनने को मिल रहा है। वर्ष 2019 में गुरू नानक देव जी के 550वें प्रकाश उत्सव के अवसर पर सुल्तानपुर लोधी (पंजाब) में तंती वाद्यो को लेकर नगर कीर्तन भी निकाला गया तां कि गुरमति संगीत मे तंती वाद्यो का प्रचार बढ़ सके। इस नगर कीर्तन में सैंकड़ो दिलरूबा, रबाब, संरदा, सारंगी, ताऊस वादको ने भाग लिया। सुल्तानपुर लोधी में गुरू ग्रन्थ साहिब में दर्ज रागो के आधार पर राग दरबार भी आयोजित किया गया जिसमे दिलरूबा वाद्यों की संगती सुनने को मिली। इस राग दरबार मे डॉ. गुरनाम सिंह (पटियाला), डॉ. अलंकार सिंह (पटियाला), डॉ. जसबीर कौर (पटियाला), प्रि. सुखवंतसिंह (जंडियाला गुरू), प्रो. करतार सिंह, भाई निर्मल सिंह आदि संगीतकारो ने रागो पर आधारित शब्द गायन किया।

यदि दिलरूबा वाद्य के शिक्षण की बात करें तो पंजाबी विश्वविद्यालय पटियाला के गुरमति संगीत विभाग में इस वाद्य की शिक्षा दी जा रही है। इसके इलावा संगीत विभाग में भी कई विद्यार्थी दिलरूबा वाद्य के साथ एम. ए कर रहे है। बड़ू साहिब (हिम. प्रदेश), जवदी टकसाल लुधियाना, श्री भैणी साहिब लुधियाना में भी दिलरूबा की तालिम दी जा रही है।

यह कहा जा सकता है कि दिलरूबा पूर्ण रूप में गुरमति संगीत को समर्पित है। हम सभी को प्रयास करना चाहिये कि दिलरूबा, रबाब, सरंदा जैसे गुरमति संगीत के वाद्यों को कॉलेज और विश्वविद्यालय मे सिखाया जाना चाहिए। ताकि गुरमति संगीत की विशाल परम्परा का जनसाधारण भी ज्ञान हासिल कर सके। आज की युवा पीढ़ी गिटार, हरमोनियम, की–बोर्ड जैसे पश्चिमी वाद्य जहाँ सीख रही है वहीं हमारे भारतीय तंत्र वाद्य दिलरूबा, रबाब, सारंदा, ताऊस, तारशहनाई जैसे मन को आनन्दित करने वाले वाद्यों को भी सीखना चाहिए।

संदर्भ ग्रन्थ स्ची

1. पं. शारंगदेव, संगीत रत्नाकर, स्वर अध्याय, पृ 22
2. जसबीर सिंह साबर (डॉ.) गुरमति संगीत अते भारतीय संस्कृति (प्रकाशित लेख) समाजिक विज्ञान पत्र, पृ. 15–16
3. निवेदिता सिंह (डॉ.), गुरमति संगीत प्रबंध : समाज शास्त्रीय परिपेक्ष (प्रकाशित लेख–सामाजिक विज्ञान पत्र) ,पृ. 39
4. श्री गुः ग्रंः साः, अंग 1075
5. श्री गुः ग्रंः साः, अंग 867
6. वार ,भाई गुरदास जी
7. योगेन्द्र पाल शर्मा बचित्तर सिंह, भारतीय संगीत इतिहास, पृ. 173
8. https://indianculture.gov.in/hi/musical-instruments/tata-vaadaya/dailaraubaa
9. https://hi.wikipedia.org/wiki/दिलरुबा_(वाद्य_यंत्र)
10. डॉ. जोगेन्द्र सिंह बावरा, भारतीय संगीत की उत्पति एवं विकास, पृ. 230